L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- II
PAPER - social psychology II
psychology (Honours)
TOPIC- Difference between perception and sensation.

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU
Assistant professor
Guest Teacher
V.S.J. College, Rajnagar
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumar.dbg2018@gmail.com.

प्रत्यक्षीकरण और संवेदना दोनों मानसिक ज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ (mental cognitive processes) है। किंतु संवेदना को प्रथम सरलतम ज्ञानात्मक व्यवहार या अनुभव कहा जाता है। जबकि संवेदना का अर्थ के योग (sensation + meaning) से उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्षीकरण की संज्ञा दी जाती है। पर यह विचार उपयुक्त नहीं जँचता संवेदना को प्रथम सरलतम ज्ञानात्मक व्यवहार कहने से यह विचार उपयुक्त नहीं जँचता अनुभव है तो इसके प्रत्यक्षीकरण में परिणत होने के लिए अर्थ का योग होना कोई महत्व नहीं रखता, क्योंकि प्रत्येक ज्ञानात्मक व्यवहार अर्थपूर्ण होता है। इसीलिए आधुनिक मनोवैज्ञानिक विशुद्ध संवेदना की कल्पना को एक मनोवैज्ञानिक शल्प (psychological myth) मानते है। इसके अनुसार प्रत्यक्षीकरण, ज्ञान और सचमुच के अनुभव का सरलतम एवं प्राथमिक रूप है, इसका कारण यह है कि वयस्क व्यक्तियों में कभी भी विशुद्ध संवेदना की प्रक्रिया नहीं पायी जाती, हालाँकि आधुनिक मनोवैज्ञानिकों का यह विचार न्यायोचित प्रतीत होता है। फिर भी साधारण एवं जटिल मानसिक क्रियाओं की शृंखला को अच्छी तरह समझने हेतु संवेदना और प्रत्यक्षीकरण के सूक्ष्म अंतर को समझना उचित होगा। अतः अब इन दोनों के बीच के मुख्य अंतरों का वर्णन किया जाता है।

(1) संवेदना एक सरल मानसिक प्रक्रिया है। जबकि प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया, कहने का अभिप्राय यह है कि संवेदना द्वारा व्यक्ति को उपस्थिति उत्तेजना का केवल चेतना या आभासमात्र ज्ञान होता है।

Scanned with CamScanner

11

पूर्व ज्ञान का अभाव रहता है। लेकिन प्रत्यक्षीकरण में उक्त उत्तेजना को मस्तिष्क में पूर्व अनुभवों के रूप में विद्यमान अन्य विभिन्न प्रतीकों के साथ तुलना करके विभेदीकरण एवं सामान्यीकरण की प्रक्रियाओं (Processes of differendation and generalization) द्वारा एक निश्चित एवं सार्थक रूप में बोध किया जाता है। इन प्रक्रियाओं में ग्राहक प्रक्रिया के अतिरिक्त अन्य कई प्रक्रियाएं जैसे- प्रतीकीकरण भावात्मक एवं पोषित अनुभव एवं एकीकरण की प्रक्रियाएं होती हैं, संवेदना में केवल ग्राहक प्रक्रिया ही होती है। अतः प्रत्यक्षीकरण अपेक्षाकृत एक जटिल मानसिक क्रिया है।

(ii) संवेदना को एक निरर्थक और प्रत्यक्षीकरण को सार्थक अनुभव कहा जा सकता है। अर्थात् संवेदना में उत्तेजना की केवल भौतिक विशेषताओं जैसे आकार, प्रकार, रंग रूप, चमकीला स्वाद आदि का ही अनुभव होता है। लेकिन प्रत्यक्षीकरण में हम इन विशेषताओं के अर्थ से भिज्ञ हो जाते हैं इसलिए प्रत्यक्षीकरण द्वारा उत्तेजना के सार्थक स्वरूप का अनुभव होता है।

(iii) वयस्क व्यक्तियों में विशुद्ध संवेदना नहीं होती, क्योंकि वयस्क व्यक्तियों में संवेदना के साथ-साथ उपस्थित उत्तेजना के सार्थक स्वरूप का भी ज्ञान होता है। अतः मनोवैज्ञानिकों ने संवेदना को अमूर्त और प्रत्यक्षीकरण को मूर्त अनुभव कहा है। हम अपने व्यावहारिक जीवन में प्रत्यक्षीकरण का अनुभव सदा होता पाते हैं। जबकि संवेदना की अनुभूति विरले होती है।

(iv) संवेदना केवल उपस्थितिकारी होती है। लेकिन प्रत्यक्षीकरण उपस्थितिकारी होने के साथ-साथ प्रतिनिधिकारी भी प्रतिरूपक होते हैं। तात्पर्य यह है कि संवेदना का संबंध केवल उपस्थित उत्तेजनाओं से प्राप्त संवेदी विवरणों के अनुभव से रहता है। उनसे संबंधित पूर्व अनुभवों से नहीं।

परन्तु प्रत्यभिज्ञान में उपस्थित उत्तेजनाओं के संवेदी विश्लेषणों एवं उनसे संबंधित पूर्व अनुभवों - दोनों को संगठित करके पूर्ण इकाई के रूप में अनुभव किया जाता है। अतः इसमें उत्तेजना के प्रतिरूपों को भी उपयोग किया जाता है।

(5) किसी उत्तेजना के उपस्थित होने पर सभी व्यक्तियों में संवेदना एकसमान होती है। जबकि उसी उत्तेजना के उपस्थित होने पर सभी व्यक्तियों में संवेदना एकसमान होती है। जबकि उसी का प्रत्यभिज्ञान विभिन्न व्यक्तियों का अलग-अलग हो सकता है।

अवधानात्मक प्रक्रिया - (Attentional Process)

व्यक्ति अपने आस-पास के वातावरण में अनेक प्रकार की उत्तेजनाओं से घिरा रहता है। परंतु हर एक उत्तेजना उसके प्रत्यक्षण की परिधि में नहीं रहती उपस्थित उत्तेजनाओं में से कुछ उत्तेजनाएं उसकी संचेतावस्था में रहती हैं। जिसका प्रत्यभिज्ञान सुस्पष्ट होता है। जबकि कुछ का प्रत्यभिज्ञान धुंधला होता है। और शेष सभी उत्तेजनाएं संचेतावस्था की सीमा से बाहर पड़ी ही रहती है। कहने का अभिप्राय यह है कि उपस्थित अनेकानेक उत्तेजनाओं या घटनाओं में से कुछ ही उत्तेजनाओं पर ध्यान जाता है। जिसकी प्रत्यक्षीकरण सुस्पष्ट होता है। अतः ध्यान या अवधान प्रत्यभिज्ञान की प्रक्रिया का आधार (basic factor) है।

Dr. Pramod Kumar Sahu
Date - 03/07/2020.